

रिचर्ड बेरेनगार्टेन

अनुवाद : बसन्त रूंगटा

Richard Berengarten

translated by Basant Rungta

## साँझ का टहलना

*... अब जब ढल रही है साँझ ...*

सूरज देवता, सुर्ख गाल — सोने के सिक्के तुम दिन के !  
 छूते भर हो तो बन जाती है मेरी चमड़ी आँखों की झीनी परत, एक कोर्निया,  
 मेरी रीढ़ भेदक नसें, और सिहर उठता है शरीर मेरा  
 उस सोने की चौंध से, उड़ेलते हो जिसके तालाब के तालाब तुम  
 इस समन्दर पर, शहर पर, और हो जाता हूँ अंधा ।  
 खड़ी रहती थीं कभी यहाँ पंक्तियाँ ही पंक्तियाँ मकानों और रास्तों की —  
 जानता हूँ जो खड़ी हैं अब भी — पर जो थे तब किसी दूसरे शहर के,  
 इसके नहीं, बदल डाला है जिसे तुमने, पूरा का पूरा ।

हम टहल रहे किनारे—किनारे । रात के  
 मछवारों की नौकाएँ खड़ी तैयार निकलने,  
 पालें बँधीं, इंजिन घरघराते, लालटेनें टिमटिमातीं गलहियों में,  
 और जैसे सारा शहर ही निकल आया हो टहलने,  
 गलबहियाँ करते प्रेमी, नौजवान ऐँठते, अकड़ाते,  
 माता पिता, बच्चे खरीदते गुब्बारे, खाते आइस—क्रीम,  
 बूढ़े ताकते चाय दुकानों की बेंचों से,  
 और काली पड़ती पहाड़ियाँ लगतीं आ रही क़रीब, पालतू जानवरों जैसे ।

शाम की मीठी उजास, फ़ैली पहाड़ियों पर, खाड़ी पर,  
 छू लिया तुम्हारी बाहों ने हलके से अभी, बेख़याली में जैसे,  
 इस रूपसी के स्पर्श की तरह जो टहल रही मेरे साथ,  
 भरे नितम्ब, छोटे—छोटे कदम, झूमती चाल,  
 घने काले बाल, खिंचे पीछे, नाजूक गला और कंधे  
 गरमी में तपे—ताम्बे से, और उसकी भूरी बादामी आँखें मुसकातीं ।  
 पीता हूँ तुझे मैं, ऐ झिलमिलाती रोशनी, जैसे अंगूरी शराब, जैसे संगीत,

जैसे पीया तुझे उसके पूर्वजों ने हज़ारों साल ।

ऐ नगरी, पोर—पोर खुले, बेरोक आवाजाही जिनमें, उसका नाम है *मुक्ति* !  
हालाँ कि तुम्हारे घावों के निशान बन चुके हैं धुँधले रेशे उसकी आँखों के  
फिर भी इस वक़्त, जब रोशनी और उसकी उतरती—चढ़ती लहरें  
फूट रहीं धीरे—धीरे उसके चेहरे पर, बोली बन, गीत बन,  
तब उसी को तो है प्राचीन अधिकार इस घाट पर चलने का !  
एक उपकरण और संरक्षक बन तुम्हारी रोशनी का !  
संचय करती जिसका वह अपनी पुतलियों की गहराइयों में,  
और है उसको ही यह प्रियतम आज़ादी,  
तुझ पर पग रखने की एक नर्त्तकी की तरह !

प्यारी सन्ध्या, हज़ारों वर्ष पुरानी रोशनी तुम,  
गाती कितने खुले गले से, प्यारी इस औरत सी,  
कैसे नहीं पूजूँ तुम्हारे लावण्य को  
जिसमें ढाल दिया है तुमने इस नगर और नगरवालों को, एक ऐसे संचे में  
जो गढ़ देता है छू भर लेता जिसे, सारे संसार को ?  
दास बन चुका हूँ तुम्हारा, यदि नहीं तुम्हारा नागरिक ।  
और हूँ इतना प्यासा तुझे पूरा का पूरा पीने, कि भर लूँगा  
रोम रोम अपना तुम्हारी दीप्ति से, उसकी आज़ादी से ।

---

रिचर्ड बेरेनगार्टेन

Richard Berengarten

अनुवाद : बसन्त रूँगटा

translated by Basant Rungta

---

**interLitQ.org**